राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

माध्यमिक

पाठ 14 : बूढ़ी पृथ्वी का दुख

कार्यपत्रक -14

1. 'यद्यपि मानव सबसे बुद्धिमान जीव है तथापि वह प्रकृति के लिए बहुत बड़ा खतरा है' 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता के संदर्भ में इस कथन की विवेचना कीजिए।

2. हमारे पूर्वज प्रकृति को पूजनीय मानते थे और पर्यावरण का संरक्षण करते थे। इस स्थिति को बदतर बनाने के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण आपकी दृष्टि में कौन-से हैं? उल्लेख कीजिए।

3. कविता के संदर्भ में 'जल ही जीवन है' विषय पर एक निबंध लिखिए।

4. बहुत से कवियों ने पर्वतों को केंद्र में रखकर कविताएं लिखी हैं। ऐसी अन्य 05 कविताएं खोजिए और उनका मूल संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

5. हम यह जानते हुए भी कि आवश्यकता से अधिक उपयोग घातक होता है, प्रकृति का शोषण कर रहे हैं। कविता में दिए संदर्भों के अतिरिक्त ऐसे और कौन से क्षेत्र हैं जिनमें हमें प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन को रोकने की आवश्यकता है? बिन्दुसार लिखिए।

6. 'बूंद-बूंद से सागर भरता है' पर्यावरण संरक्षण के लिए इस उक्ति की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

7. प्रकृति का मानवीकरण कवियों को सदैव ही प्रिय रहा है। ऐसी 02 कविताएं चुनिए जिनमें प्रकृति का मानवीकरण किया गया है।

8. 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता के शीर्षक की उपयुक्तता का मूल्यांकन कीजिए।

9. कविता की अंतिम पंक्ति है 'मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है!!' आपकी दृष्टि में आदमी होने से क्या तात्पर्य है?

10. मान लीजिए आप अपने शहर के प्रशासक हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए आप क्या-क्या कदम उठाएंगे। विस्तार से लिखिए।